जलवायु परिवर्त्तन : समस्या और समाधान

डा0 अभय कुमार

सामान्यतः जलवायु का आशय, किसी क्षेत्र विशेष में लंबे समय तक औसत मौसम से होता है जब किसी क्षेत्र विशेष के औसत मौसम में परिवर्त्तन आता है तो उसे जलवायु परिवर्त्तन कहते हैं। जलवायु परिवर्त्तन को किसी स्थान विशेष में भी महसूस किया जा सकता है एवं सम्पूर्ण विश्व में भी। 1992 में रियो पृथ्वी सम्मेलन तथा जलवायु परिवर्त्तन पर संयुक्त राष्ट्र समझौते में यह स्वीकार किया गया कि दुनिया के विभिन्न हिस्सों में जलवायु परिवर्त्तन के विभिन्न रूप हैं। इनमें विश्व में गर्मी में तापमान का बढ़ना, सर्दी में कम समय में बहुत ठंढ पड़ना, अनियमित रूप से वर्षा का होना, तेजावी बारिश होना शामिल है। ग्लोबल वार्मिंग की गंभीरता को देखते हुए पूरी दुनिया में इसके खतरे को स्वीकार किया है।